- डेयरी उत्पाद का पैकेजिंग आकर्षक हो और शुद्धता बनी रहे।
- थोक एवं खुदरा विक्रेताओं के लिए अलग स्किम रखे।
- स्थानीय टीवी, रेडिओ, समाचार पत्रों और सोशल मीडिया में उत्पाद का प्रमोशन करना चाहिए।
- ग्राहक की प्रतिक्रिया लेना और सम्यक सुधार करना चाहिए।

तकनीकी और डिजिटल एकीकरण

- डेयरी उद्योग को स्मार्ट तकनीकों, डिजिटल टूल्स और डेटा–आधारित यंत्रों के माध्यम से अधिक कुशल, टिकाऊ और लाभदायक बनाया जाता है।
- डिजिटल उपकरण और सॉफ्टवेयर डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन और पोषण पर नजर रखने में मदद करते हैं।
- डेयरी फार्मों में, डिजिटल तकनीकों और संसाधनों के उपयोग से कचरे को कम करने में मदद कर सकता है।
- उन्नत तकनीकों का उपयोग करके, डेयरी फार्म से अधिक दूध का उत्पादन कर सकते हैं।
- स्वचालन और डेटा विश्लेषण से डेयरी फार्मों को अधिक कुशलता से काम करने में मदद मिलती है।

वैज्ञानिक तरीके से पशु प्रबंधन के लाभ

- संतुलित आहार और उचित प्रजनन से पशुओं की उत्पादकता (दूध, मांस, अंडा आदि) में निरन्तर वृद्धि होती है।
- पशु को नियमित रूप से टीकाकरण, सफाई और निगरानी करने से पशु के बीमारियों पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- नियमित स्वास्थ्य जांच, परजीवी नियंत्रण और स्वच्छ वातावरण से बीमारियों की संभावना कम होती है।
- उपलब्ध संसाधनों (चारा, गोबर, कृषि अवशेष) का पुनः उपयोग कर लागत घटाई जा सकती है।
- गोबर गैस संयंत्र, जैविक खाद और अपशिष्ट प्रबंधन से प्रदूषण कम होता है।
- ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए स्वरोजगार और स्वयं सहायता समूह के अवसर बढ़ते हैं।
- दुग्ध प्रसंस्करण कर मूल्यवर्धक दही, घी, पनीर, बटर आदि उत्पादों से ज्यादा मुनाफा होता है।
- बहुउत्पादक गतिविधियों (जैसे दूध, गोबर, वर्मी कंपोस्ट, जैविक खाद) से अतिरिक्त आमदनी होती है।

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा
योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा
दीप नारायण सिंह, विभागाध्यक्ष, पशुधन प्रक्षेत्र परिसर

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/68/2026/DEE/BASU-Patna

वैज्ञानिक तरीके से पशु प्रबंधन

आलेख:

रंजना सिन्हा, दीप नारायण सिंह, मनमोहन कुमार,
योगेन्द्र सिंह जादौन एवं सुचित कुमार

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

वैज्ञानिक तरीके से पशु प्रबंधन

वैज्ञानिक पशु प्रबंधन का अर्थ है डेयरी पशुओं की देखभाल और दूध उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए पशुओं के वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन किया जाता है, जिसके अंतर्गत पशुओं के पालन–पोषण, आवास, स्वास्थ्य देखभाल, प्रजनन, उत्पादन तथा विपणन से संबंधित सभी घटकों का जिससे परस्पर समन्वय पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि हो और किसानों की आमदनी बढ़ाने में काफी मदद मिलती है।

पशु प्रबंधन प्रणाली के मुख्य घटक

पशु आहार प्रबंधन

- संतुलित आहार जिसमें पशु को प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज, विटामिन और पानी की सही मात्रा में आवश्यकता होती है।
- आहार की उचित मात्रा एवं नियमित समय पर भोजन देना चाहिए और अधिक मात्रा में खिलाने से बचना चाहिए। पशु को दिन में दो से तीन बार खिलाना उचित होता है।
- पशु आहार में सूखा चारा, हरी घास, अनाज तथा खनिज मिश्रण का सही अनुपात होना चाहिए।
- पशु को स्वच्छ और पर्याप्त मात्रा में पानी देना चाहिए।
- गाभिन पशु को अधिक ऊर्जा और प्रोटीन वाला आहार देना चाहिए।

आवास प्रबंधन

- पशुशाला साफ –सुथरा और हवादार होनी चाहिए।
- उष्णकटिबंधीय क्षेत्रो में शेड की दिशा पूर्व से पश्चिम की ओर होनी चाहिए।

- शेड की ऊंचाई लगभग 10 से 12 फीट होनी चाहिए।
- पशुशाला को नियमित रूप से साफ, नमी से बचाव करना चाहिए ताकि कीटाणुओं और बीमारियों का खतरा कम हो।
- पशुओं के बैठने एवं विश्राम का स्थान साफ, सूखा एवं फिसलन रहित होना चाहिए, ताकि उन्हें किसी प्रकार की चोट या संक्रमण का खतरा न हो। पशु आवास में बिजली एवं स्वच्छ पानी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करना भी अत्यंत आवश्यक है।

स्वास्थ्य देखभाल

- पशुओं को नियमित समय पर खुरपका–मुंहपका, गलघोंटू, ब्रुसेल्लोसिस जैसी बिमारियों की रोकथाम हेतु खिलाफ टीकाकरण करना चाहिए।
- अन्तः और बाह्य परजीवी से मुक्ति के लिए समय –समय पर कृमिनाशक दवा देना चाहिए।
- पशुशाला में मक्खियॉ, मच्छर आदि से बचाव के लिए कीट नियंत्रण करना चाहिए।
- पशु चिकित्सा सेवाओं का अभिलेख अवश्य रखें।
- पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें साफ–सुथरे और कीटाणुरहित वातावरण में रखना अत्यंत आवश्यक है। इससे बीमारियों का खतरा कम होता है और पशुओं की उत्पादकता भी बढ़ती है।

प्रजनन प्रबंधन

- पशु में मद /गर्मी के लक्षण को सही से पहचान करना अत्यंत आवश्यक होता है।
- मद की वास्तविक अवस्था में गाय अपने साथी गाय तथा टीजर सांड को अपने ऊपर चढ़ने पर शांत अवस्था में खड़ी रहना, यह मद की पहचान करने के सही लक्षण है।
- पशु को उचित समय तथा अच्छी गुणवत्ता वाले वीर्य से गर्भाधान कराए।
- पशु को हमेशा प्रशिक्षित व्यक्ति से ही गर्भाधान कराना चाहिए।
- उन्नत प्रजनन तकनीक –कृत्रिम गर्भाधान, नस्ल सुधार और प्रजनन चक्र का वैज्ञानिक प्रबंधन करना चाहिए।
- प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए पशुओं पर कुशल निगरानी एवं प्रजनन संबंधी अभिलेख रखना अति आवश्यक है। इन अभिलेखों से पशु प्रजनन तथा उससे संबंधित प्रबंधन का समुचित ज्ञान आसानी से मिल सकता है।

उत्पादन प्रबंधन

- दूध उत्पादन को उचित संग्रह कर उसका रिकॉर्ड रखना चाहिए।
- दूध एवं मांस को प्रसंस्करण के जरिये मूल्यवर्धक उत्पाद बनाया जाता है।
- मूल्यवर्धक उत्पाद के गुणवत्ता, शेल्फ –लाइफ , स्वाद और बाजार मूल्य में बृद्धि होती है।
- मूल्यवर्धक उत्पादों से डेयरी उद्यमी अपनी आय कई गुना बढ़ा सकते है।

अपशिष्ट प्रबंधन

- पशुओं द्वारा उत्पन्न कचरे का सही तरीके से प्रबंधन करना बहुत आवश्यक होता है जिससे कि पर्यावरणीय प्रदूषण जल स्रोतों का दूषण, हवा में दुर्गंध और रोग फैलाव जैसे नकारात्मक प्रभावों को रोका जा सके। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वस्थ पशुपालन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।
- **कम्पोस्टिंग** प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें जैविक कचरे (जैसे गोबर, मूत्र, बिछावन, चारा अवशेष आदि) को सूक्ष्मजीवों की मदद से विघटित करके अंतिम उत्पाद के रूप में जैविक खाद बनाया जाता है, जिसके प्रयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता बढ़ता है। पशु फार्म अपशिष्ट प्रबंधन एक सस्ता, पर्यावरण के अनुकूल और पोषक तत्वों से भरपूर उर्वरक है।
- **बायोगैस प्लांट** पशुओं के गोबर और अन्य जैविक कचरे को विघटित करके बायोगैस तैयार की जाती है। जिसमे मुख्या रूप से मीथेन होता है, जो ऊर्जा का नवीकरणीय स्त्रोत है, जिसका प्रयोग खाना पकाने या बिजली के उत्पादन के लिए किया जा सकता है।
- **वर्मी कम्पोस्टिंग** केंचुए के माध्यम से उच्च गुणवत्ता की खाद बनाई जा सकती है।

विपणन

- डेयरी उत्पादों के लिए एक सफल विपणन रणनीति बनाने के लिए मजबूत एवं प्रभावी मूल्य निर्धारण, और कुशल वितरण प्रणाली की आवश्यकता होती है।
- ऊन, मांस, अंडा आदि उत्पादों का उचित संग्रहण और विपणन करना चाहिए।
- उपभोक्ताओं की पसंद और आवश्कताओं का ध्यान रखना चाहिए।
- विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे दूध, दही, पनीर आदि की उपलब्धता होनी चाहिए